श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

जय बोलिये

मुनिव्रत पालक, मुनिव्रत दाता,
मुनिव्रत रक्षक, परम प्रमाता,
संकटमोचक,
विघ्न विनाशक,
मंगलकारी, कष्ट निवारी,
उपकारी,
सर्व सौख्य कर्त्ता,
सुख-शांति के सृजेता
परमपूज्य
श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : हरि भज लो हरि भज लो....)

प्रभु भजलो प्रभु भजलो, समय प्रभु के भजन का है।
करो भक्ति करो भक्ति, मुनिसुव्रत प्रभु की जय॥

प्रभु की जय सतत गूँजे, जिन्हें सुर देव भी पूजें।
उन्हीं का नाम लेकर के, किसे भक्ति नहीं सूझे॥
उन्हीं का नाम साँचा है, उन्हीं का दर चमन सा है।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 1॥

हुये प्रभु जब दिगम्बर तो, झुके चरणों में भू-अम्बर।
करें क्या ग्रह-परिग्रह फिर, जहाँ कोई न आडम्बर॥
उन्हीं का दर्श पाकर के, हमारा मन मगन-सा है।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 2॥

कभी आतम-चिदातम की, ललक में मात खा बैठे।
मिली आतम-चिदातम ना, तभी तेरे निकट बैठे॥
तुम्हें अपना बना करके, दिखा है मोक्ष का आलय।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 3॥

तुम्हारी जो शरण पाते, उन्हें ना विघ्न कष्ट आते।
नजर हम पर करो स्वामी, हमें क्यों आप तड़पाते॥
मुनिसुव्रत प्रभो दे दो, 'मुनिसुव्रत'-श्रमण को जय।
करो भक्ति करो भक्ति.....॥ 4॥

श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुये, मन की अखियाँ खोल॥

(लय : शांतिविधानवत्)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जगलोचन ! हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥

कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आयी टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिये, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिये।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्! अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

(ज्ञानोदय)

जनम हमारा जब होता तब, हम रोते पर सब हँसते।
गर सुधरा फिर जरा-मरण तो, सब रोते पर हम हँसते॥
जनम जरा वा मरण नशाने, प्रासुक जल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं .....।

मौसम या सूरज का तपना, कभी-कभी तो रुच जाये।
पर मन का संताप जीव को, सदा-सदा ही झुलसाए॥

भव-भव का संताप नशाने, यह चन्दन स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं .....।

कहीं-क हीं सम्मान मिले पर, कहीं-कहीं अपमान मिले।
आपाधापी की दुनियाँ में, किस्मत से जिनधाम मिले॥
पद की सम्पद आपद हरने, ये तंदुल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् .....।

नासा का आकार फूल सा, सौरभ पाने ललचाये।
जिससे आतम पापी बनती, काम व्यथा यों तड़फाये॥
काम, विवादों की जड़ हरने, पुष्प गुच्छ स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं .....।

मरें भूख से कम प्राणी पर, खा-खा के मरते ज्यादा।
फिर भी खाने को सब दौड़ें, मरे भूख का ना दादा॥
क्षुधारोग आतङ्क हरण को, नैवेद्यक स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं .....।

सूर्य हजारों किरणों वाला, महामोह तम हर न सके।
नाथ! आपकी एक किरण से, नशे वही कुछ कर न सके॥
मोह हरण को मिले उजाला, भक्ति दीप स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं .....।

सोने की संगत से कपड़े, मूल्यवान यशवान हुये।
तो फिर भक्त आपके बनकर, क्या? अपने ना काम हुये॥
अष्ट कर्म कालिख हरने को, धूप गंध स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं .....।

अरे! फलों से लदे पेड़ तो, धरती पर नत-मस्तक हों।
वैसे नाथ! आपको नमकर, भक्त आपके उन्नत हों॥
उन्नत होकर मोक्ष प्राप्ति को,प्रासुक फल स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं .....।

नीर भाव वंदन चन्दन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन! सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं .....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

प्राणत नामक स्वर्ग त्याग जब, श्रावण कृष्णा दूज रही।
सोमा जी के गर्भ पधारे, पूज्य गर्भ कल्याण यही॥
गर्भों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व गर्भकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जब वैशाख कृष्ण की दशमी, नगर राजगृह जन्म लिया।
श्री सुमित्र राजा का आँगन, और जगत् सब धन्य किया॥
जन्मों के कष्टों का सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व जन्मकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.... ।

तज वैशाख कृष्ण दशमी को, सकल परिग्रह दीक्षा ली।
तपकल्याणक पर्व मनाकर, सबने शिव की शिक्षा ली॥
अटकन-भटकन का दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
तपकल्याणक मंगलमय सो, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..... ।

तिथि वैशाख कृष्ण नवमी को, घाति कर्म सब नशा दिये।
केवलज्ञान राज्य पाया सो, सुर-नर सब मिल पर्व किये॥
अघ अज्ञान जनित दुख सहना, नाथ! हमारा मिट जाये।
पर्व ज्ञानकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस फाल्गुन कृष्ण रात में, प्रतिमायोगी कर्म नशा।
मोक्ष गये सम्मेदशिखर से, हम पायें सब यही दशा॥
अष्ट कर्म का बंधन सहना, नाथ हमारा मिट जाये।
पर्व मोक्षकल्याणक सो हम, आज मनाने को आये॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

गुण गण के भण्डार हैं, मुनिसुव्रत भगवान्।
जयमाला के नाम हम, करते कुछ गुणगान॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

भरतक्षेत्र के मगधदेश में, रहा राजगृह धाम।
उसमें सुमित्र नामक राजा, करें राज्य के काम॥
उनकी रानी बड़ी सुशीला, सोमा जिसका नाम।
उनको सोलह सपने देकर, आये श्री भगवान्॥ 1॥

बीस धनुष की ऊँची काया, मोर कण्ठ सम नील।
सभी लक्षणों से शोभित थे, सुव्रतलाल सुशील॥
कुशल राज्य के संचालन में, एक मिला संयोग।
हाथी का वैराग्य देखकर, बनें विरागी योग॥ 2॥

आत्मज्ञान पा तजे परिग्रह, बने निरम्बर नाथ।
एक हजार राज-राजा ने, दीक्षा ली थी साथ॥

चार ज्ञान के धारी भगवन्, पाये केवलज्ञान।
समवसरण में हुये सुशोभित,दिये मुक्ति का ज्ञान॥ 3॥

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, हजार मुनि के साथ।
प्रतिमायोग धार कर पाये, महा मोक्ष विख्यात॥
नाथ! आपकी नीली काया, करे मोह तम नाश।
वचन सूर्य की किरणें जग में, करतीं सदा प्रकाश॥ 4॥

आप रहे हरिवंश गगन के, निर्मल चन्दा रूप।
भव्य कुमुद को विकसित करते, दे दो हमें स्वरूप॥
नाथ! आप के तीर्थकाल में, चक्री था हरिषेण।
राम लखन रावण जन्मे थे, रामायण रूपेण॥ 5॥

कथा आपकी व्यथा नशाये, नाम करे सब काम।
फिर भी लोगों ने शनि ग्रह में, बाँध रखा प्रभु-नाम॥
मोह परिग्रह संकट बाधा, उसके होते नाश।
रोम-रोम में जिसके करते, 'सुव्रत' नाथ निवास ॥ 6॥

(दोहा)

आप गुणों के सिंधु हो, भक्ति हमारी नाँव।
हम क्या पावें पार तुम, पहुँचाओ शिव गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा.....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

प्रथम वलय पूजन

स्थापना (दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुये, मन की अखियाँ खोल॥

(लय : शांतिविधानवत्)

हे मुनिसुव्रत ! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत ! जिनराज ! अहा!
हे संकटमोचन ! जग लोचन ! हे भविभूषण ! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आयी टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिये,कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिये।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्! अब आओ आओ भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर.....।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो.....।

(ज्ञानोदय)

नाथ! आपको जब से ध्याया, नजर हमारी बदल गयी।
जहाँ निहारें वहीं आप हो, फिर भी भक्ति मचल रही॥
आप आप में जल में भी हो, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

प्रभु के गुण का सौरभ महके, कण-कण में चंदन दिखता।
सेवक वन्दक प्राणीजन का, भवाताप सब ही मिटता॥
आप आप में चंदन में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे ?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

जड़ पदार्थ में जड़मति होकर, चेतन हमने विसरायी।
किन्तु देख मूरत प्रभु तेरी, हमें चेतना सी आयी॥
आप आप में अक्षत में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् .....।

प्रभु पद में मन भ्रमर हमारा, आज तलक तो रमा नहीं।
रम जाये प्रभु-गुण गाये तो, कोई अपने समा नहीं॥
आप आप में पुष्पों में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं .....।

सदा शुभाशुभ भावों जैसे, भक्ष्याभक्ष्य भखे हमने।
तन मन की तो आग बुझी ना, भड़क रही है क्षण-क्षण में॥
आप आप में नैवज में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं .....।

नश्वर दीप जलाकर स्वामी, अविनश्वर हम बन जायें।
जले हृदय में प्रेम जोत तो, अंधकार सब मिट जायें॥
आप आप में दीपक में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं .....।

हमें बाह्य जग ना महाकाना, तभी धूप यह चढ़ा रहे।
चेतन का अंतर जग महके, कर्म हनन पर लुभा रहे॥
आप आप में धूपों में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

सांसारिक फल खाकर हम तो,बहुत दुखी, कम सुखी हुये।
महा मोक्षफल पाने फल को, अर्पण के उन्मुखी हुये॥

आप आप में फल में भी हो, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं .....।

अनर्घ पद के समक्ष सोचो, मूल्य अर्घ्य का क्या होगा ?
किन्तु चढ़ाते भाव भक्ति से, तो कारज क्यों ना होगा॥
आप आप में अर्घ्यों में भी, प्रभु से प्रभु पूजें कैसे?
हमें क्षमा कर शीघ्र बना लो, प्रभु सुव्रत! अपने जैसे॥

ॐ ह्रीं सम्यक्तवसाधनरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं .....।

प्रथम वलय अर्घ्यावली

(10 सम्यक्त्व वर्णन)

(लय : माता तू दया करके .....)

कोई न हमारा है, हमको प्रभु अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥
अपना सबको माना, कथनी सबकी मानी।
दुख भोगा पर हमने, जिनवाणी ना मानी॥
हितकर जिनवर उपदेश - अब हमको अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 1॥

ॐ ह्रीं कुज्ञाननाशक आज्ञासम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

हमने शिवपथ पाया, पर चले कुपथ पर हम।
सो भटके अब तक पर, नहिं चले सुपथ पर हम॥
अब शिवपथ मंगलमय, श्रद्धा से अपनाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 2॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकुमार्गनाशक मार्गसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

दुखकर साहित्य सुना, त्यों श्रद्धा मन भायी।
अब पुरुष शलाका के, चारित्र सुनो भाई॥
चारित्र कथन सुनकर, श्रद्धा उर में लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 3॥

ॐ ह्रीं हिताहितविज्ञानदायक उपदेशसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

नहिं सद्गुरु पहचाने, नहिं सद्चर्या जानी।
अब मुनिचर्या वाले, सद्ग्रंथ सुनो प्राणी॥
सद्ग्रंथों को सुनके, श्रद्धा को उपजाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 4॥

ॐ ह्रीं भयातङ्कनाशक सूत्रसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

करणानुयोग के ग्रंथ, या बीज सूत्र सुन के।
जो श्रद्धा लेती जन्म, वो पाप हरे मन के॥
वह बीज नाम वाला, सम्यग्दर्शन पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 5॥

ॐ ह्रीं संसारमूलहेतुनाशक बीजसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

जीवादिक तत्त्वों का, संक्षिप्त रूप सुनके।
जन्मी श्रद्धा हरती, सारे दुख आतम के॥
सम्यग्दर्शन संक्षेप, हम भक्तों को पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 6॥

ॐ ह्रीं पापवर्धकभावनाशक संक्षिप्तसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जो भव्य जीव सुनते, विस्तृत श्री जिनवाणी।
उससे जो श्रद्धा हो, वह होती कल्याणी॥
विस्तार नाम का वह, सम्यक्त्व हृदय लाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 7॥

ॐ ह्रीं पुण्यवर्धक विस्तारसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

बिन वचनों के विस्तार, तत्त्वार्थ ग्रहण करना।
तब होता जो विश्वास, वह श्रद्धा उर धरना॥
वह अर्थ नाम धारी, सम्यग्दर्शन जाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 8॥

ॐ ह्रीं परमार्थदायदायक अर्थसम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

श्रुतकेवलि का सम्यक्त्व, अवगाढ़ कहाता है।
सब तत्त्व द्रव्य जाने, तम मोह नशाता है॥
अवगाढ़ नाम का वह, सम्यक्त्व श्रेष्ठ माना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 9॥

ॐ ह्रीं पूज्यदृष्टिप्रदायक अवगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ।

केवलि जिनवर का जो, सम्यक्त्व रहा न्यारा।
है वही परम-अवगाढ़, सम्यक्त्व महा प्यारा॥
वह साधन मुक्ति का, प्रभु वंदन से पाना।
मन में वसकर हमको, प्रभु पावन कर जाना॥ 10॥

ॐ ह्रीं रोगपातनाशक परमावगाढ़सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

प्रथमवलय जयमाला

(दोहा)

प्रथम चरण शिवमार्ग का, सम्यग्दर्शन द्वार।
मुनिसुव्रत भगवान् का, दर्शन दे सुख सार॥

(सुविद्या) (लय : बड़ी बारहभावनावत्)

हे स्वामिन्! हम तेरे द्वारे, आकर करें पुकार।
कृपा करो हमको अपनाओ, करो भक्त उद्धार॥
दृष्टि हमारे पर भी डालो, दो सम्यक्त्व सुदान।
इस सम्यक्त्व बिना हम पाते, कष्टों भरी खदान॥ 1॥

इतना साहस हममें भर दो, देव शास्त्र गुरुदेव।
भूल कभी इनको ना पायें हृदय रहें स्वयमेव॥
जिन उपदेशों को आज्ञा लख, सदा करें स्वीकार।
मिले मोक्षपथ, महाजनों का, सुनें शास्त्र हितकार॥ 2॥

श्रमण सूत्र को जानें समझें, बीज पदों का ध्यान।
संक्षेपी विस्तार रूप से, पायें हम श्रद्धान॥

तत्त्व-अर्थ को हृदय धारकर, श्रद्धा हो अवगाढ़।
जिससे सम्यग्दर्शन पावें, परम-परम अवगाढ़ ॥ 3॥

बस इतनी सी अरज हमारी, पूरी हो भगवान्।
तभी आपकी करें अर्चना, घटे पाप अभिमान॥
मुनिसुव्रत प्रभु सुव्रतदाता, 'सुव्रत' दे दो दान।
भक्त तुम्हारे दास रहेंगे, करके निज कल्याण॥ 4॥

(दोहा)

गुण गायें जिनदेव के, गुणी बनें स्वयमेव।
जयमाला हम क्या कहें, प्रभु सुव्रत जय देव॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्वसाधनरूप-श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय प्रथमवलयजयमालापूर्णार्घ्यं ..।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा ....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलि....)

द्वितीय वलय पूजन

स्थापना

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुये, मन की अखियाँ खोल॥

(लय : शांतिविधानवत्)

हे मुनिसुव्रत! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत! जिनराज! अहा!
हे संकटमोचन! जग लोचन! हे भविभूषण! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते।
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥

कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आयी टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥

हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिये, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिये।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्! अब आओ आओ भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर.....।

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः ठः.....।

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ.....।

(पुष्पांजलिं....)

(ज्ञानोदय)

निर्मल जल से निर्मल प्रभु की, पूजा आज रचाते हैं।
कंचन सी आतम बन जाये, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

चंदन से गुणवान नाथ की, पूजा आज रचाते हैं।
दुर्गुण तज सद्गुण पा जायें, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदन .....।

अक्षत से अविनाशी प्रभु की, पूजा आज रचाते हैं।
जगपद तज अक्षयपद पायें, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् .....।

पुष्पों से चिन्मय जिनवर की, पूजा आज रचाते हैं।
जगत भ्रमण तज आत्मरमण हो, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं .....।

ले नैवेद्य मधुर रस वाले, पूजा आज रचाते हैं।
क्षुधा हरें ज्ञानामृत पायें, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं .....।

शुचि दीपक से जिन सूरज की, पूजा आज रचाते हैं।
मोह केतु हर ज्ञानोदय हो, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं .....।

धूप सुगंधी खेकर हम सब, पूजा आज रचाते हैं।
कर्माष्टक बिन आतम महके, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं .....।

सुफल मनोहर थाल-थाल भर, पूजा आज रचाते हैं।
कुफल त्याग कर मिले मोक्षफल, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं .....।

द्रव्य मिलाकर अर्घ्य चढ़ाकर, पूजा आज रचाते हैं।
अनर्घ पद अपना प्रकटायें, यही भावना भाते हैं॥
मुनिसुव्रतप्रभु के चरणों में, नमस्कार हम करते हैं।
प्रभु अर्चक भव पार उतरते, चमत्कार ये दिखते हैं॥

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं .....।

द्वितीय वलय-अर्घ्यावली

(जन्म के दस अतिशय) (सुविधा)

तीन लोक में अतिशय सुंदर, जिनकी प्यारी देह।
कांतिमान है पुण्यवान् है, शोभनीय शुभ गेह॥
नाथ! आप ऐसी काया में, शोभो तिलक समान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 1॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकुरूपतानाशक अतिशयसुंदरदेहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

फूल इत्र से ज्यादा-ज्यादा, सुरभित रहा शरीर।
दिव्य अलौकिक ऐसा सौरभ, हरे हमारी पीर॥
प्रभु अत्यंत सुगन्धित तन में, शोभ रहे गुणवान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 2॥

ॐ ह्रीं नासिकारोगनाशक अत्यंतसुगन्धितदेहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संसारी जन के तन में तो, रोम-कूप बहु द्वार।
मैल पसीना घृणित बनाता, पर प्रभु तन सुखकार॥
मैल पसीना रहित आपका, शोभित तन भगवान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 3॥

ॐ ह्रीं चञ्चलतादोषनाशक स्वेदरहितदेहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

सात धातुमय औदारिक तन, नव द्वारी मलकूप।
किन्तु आपकी देह अलौकिक, मलों रहित शिवरूप॥
सकल विश्व कल्याण भावना, करके बने महान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 4॥

ॐ ह्रीं ईर्ष्या घृणादोषनाशक मलमूत्ररहितदेहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

पशु पाते बिन भाषा के दुख, दुखी करें नर बोल।
हित-मित-प्रिय वचनों की औषध, जग में है अनमोल॥
सबको प्यारे वचन आपके, करें जगत् कल्याण।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 5 ॥

ॐ ह्रीं वचनविवादनाशक हितमितप्रियवादक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

बलवानों की मुट्ठी में तो, हो जाता संसार।
आत्म विजेता यों बल पाते, जिसकी जय-जयकार॥
धर्म अहिंसा के तुम स्वामी, दुनियाँ में बलवान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 6॥

ॐ ह्रीं समस्तविधनिर्बलतानाशक अतुलबलवान् श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

श्वेत दूधसम श्वेत रक्त तो, पाते परम दयाल।
उज्ज्वल-उज्ज्वल भाव भंगिमा, करती मालामाल॥
त्याग तपस्या की यह महिमा, हम सबको वरदान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 7॥

ॐ ह्रीं भावकालिमानाशक श्वेतरुधिरवान् श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

एक हजार आठ शुभ लक्षण, प्रभु के तन में व्याप्त ।
नौ सौ व्यंजन और एक सौ-आठ बड़े विख्यात ॥
चुम्बक सा आकर्षण जिनमें, तन में रतन समान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 8॥

ॐ ह्रीं समस्त अपशकुननाशक शुभलक्षणमयदेहस्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

दिव्य-दिव्य आकार देह का, समचतुष्क संस्थान।
जिसे देखकर चुप्पी साधे, सुर इन्द्रों का ज्ञान॥
प्रभु के तन से हटें न नजरें, शांतिमार्ग दें दान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 9॥

ॐ ह्रीं देहविकारनाशक समचतुरस्रसंस्थानवान् श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

बाहर सुंदर भीतर से भी, हीरे से मजबूत।
वज्रवृषभनाराच संहनन, देह बने शिवदूत॥
सहनशीलता अद्भुत पायी, कर्मभूत की हान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 10 ॥

ॐ ह्रीं धैर्यसाहसप्रदायक वज्रवृषभनाराचसंहननवान् श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

(केवलज्ञान के दस अतिशय)

चारों ओर केवली प्रभु के, सौ-सौ योजन पार ॥
सुभिक्षता हो जाती सुन लो, प्रभु की जय-जयकार ।
ईति-भीति अकाल मारी ये, नाशें करुणावान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 11॥

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षतानाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

एक इञ्च भी उठ नहिं सकते, ऊपर मूढ़ी लोग।
केवलज्ञानी आप गगन में, शोभित वंदन योग्य॥
गगनविहारी कमलविहारी, अद्भुत महिमावान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 12॥

ॐ ह्रीं परिग्रहभूतनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

एक मुखी केवलज्ञानी के, चउ-चउ दिखते पूर्ण।
चार दिशा में चउ आनन से, पावन जग संपूर्ण॥
लगा टक - टकी भक्त निहारें, प्रभु मूरत गुणखान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 13॥

ॐ ह्रीं आसक्तिलोलुपतानाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

केवलज्ञानी परम दया से, परिपूरित सुख धाम।
दया-धाम के आस-पास में, हिंसा का क्या काम?
करुणा प्रेम दया के सागर, हरें वैर अभिमान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 14॥

ॐ ह्रीं हिंसा-उत्पातनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

केवलज्ञानी और उन्हीं के, सभासदों के पास।
उपसर्गों का नाम न होता, अद्भुत यह संन्यास॥
परम-परम समता का आलय, शांति पर्व जिनधाम।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 15॥

ॐ ह्रीं आतंरिकबाह्य आपदानाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

एक बार योगी खाते हैं, भोगी दोनों बार।
बार-बार रोगी खाते पर, प्रभु न करें अहार॥
फिर भी केवलज्ञानी का तन, अद्भुत सूर्य समान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 16॥

ॐ ह्रीं क्षुधामारीनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

जग में जितनी रहीं कलाऐं, विद्याऐं व्यवहार।
उसके स्वामी केवलज्ञानी, दर्पणवत् अविकार॥
लोकालोक प्रकाशी जिनवर, वीतराग विज्ञान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 17॥

ॐ ह्रीं समस्तविध बन्धननाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

केवलज्ञान प्राप्त होने पर, नहीं बढ़ें नख-केश।
देह पारदर्शी हो जाती, नहीं दोष अवशेष॥
परम परम-औदारिक तनमय, राजित जिन भगवान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 18॥

ॐ ह्रीं समस्तविध आचरणशिथिलतानाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

नयनों की पलकों की झपकन, अपना रहा प्रमाद।
साधक बनकर सावधान रह, जिनवर हरे प्रमाद॥
ज्ञान नयन ने इन नयनों के, पलक किये थिर थान।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 19॥

ॐ ह्रीं मन वचन काय अस्थिरतादोषनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

देह हुयी मणियों सी जब से, पाया केवलज्ञान।
पड़े दिखे ना परछाईं भी, चमत्कार की खान॥
तीन लोक मुट्ठी में सिमटे, कण-कण में भगवान्।
हम तो बने सितारे प्रभु जी, करके प्रभु गुणगान॥ 20॥

ॐ ह्रीं दृष्टिदोषनाशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

द्वितीय वलय जयमाला

भक्ति अर्चना से हुये, अतिशय बड़े महान्।
चमत्कार के धाम हैं, मुनिसुव्रत भगवान्॥

(सुविद्या)

भाए भावना बारह बाँधे, तीर्थंकर शुभ नाम।
उसकी महिमा पूर्ण सुनाना, वश का ना वह काम॥
फिर भी भक्ति बाँध टूटे तो, भक्ति करे वाचाल।
मुनिसुव्रत प्रभु के चरणों में, स्वतः झुके भवि-भाल ॥ 1॥

प्रभु तन अतिशय सुंदर सुरभित, बिन मल-मूत्र निहार।
स्वेद रहित हो श्वेत रुधिरमय, हित-मित-प्रिय वच सार॥
शुभ लक्षण हो हजार तन में, अतुल वीर्य बलवान।
पहला संहनन, जन्म काल से, हो जब तक अवसान॥ 2॥

यों तन यदि संसारी पायें, तो करते उत्पात।
किन्तु साधना करके तुमने, कारज किया विशात॥
घाति कर्म हर चमत्कार कर, पाये केवलज्ञान।
जिससे सौ-सौ योजन जग में, सुभिक्षता सुख-धाम॥ 3॥

नभ में रहते, चउ मुख दिखते, अदया हुयी समाप्त।
उपसर्गों का काम रहा क्या? कवलाहार समाप्त॥
विद्या-पति हो तन छाया बिन, बढ़े नहीं नख केश।
नेत्रों की पलकें ना झपकें, जय-जय जिन परमेश॥ 4॥

चमत्कार ये कहाँ दिखेंगे? पहुँचायें भव पार।
नमस्कार इनको करते हम, स्वार्थ रहित सत्कार॥
प्रभु-वैभव लख गुण गाते हम, वैभव मिले अपार।
अपने जैसा हमें बना लो, तुम तो बड़े उदार॥ 5॥

(दोहा)

मुनिसुव्रत भगवान् के, श्रद्धालु विख्यात।
ऋद्धि सिद्धि उनको हुयी, तो प्रभु की क्या बात ?

ॐ ह्रीं अतिशयधारी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय लौकिकचमत्कारसंबंधी मूढ़ता विनाशनाय द्वितीयवलय जयमाला महार्घ्यं .....।

मुनिसुव्रत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा.....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं.....)

तृतीय वलय पूजन

स्थापना

मुनिसुव्रत भगवान् की, महिमा के कुछ बोल।
गाने को उद्यत हुये, मन की अखियाँ खोल॥

(लय : शांतिविधानवत्)

हे मुनिसुव्रत! हे मुनिसुव्रत, हे मुनिसुव्रत! जिनराज! अहा!
हे संकटमोचन! जग लोचन! हे भविभूषण! सिरताज! महा॥
बस नाम आपका लेने से, हम भक्तों के संकट टलते॥
फिर मन मंदिर में प्रेम दया के, फूल खिलें दीपक जलते॥

कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, सो भक्तों की आयी टोली।
कर दर्शन पूजन खुशी-खुशी, हो जिनवर की जय-जय बोली॥
हम यथा-शक्ति से द्रव्य लिये, कुछ भाव-भक्तिमय शब्द लिये।
हम तुम्हें पुकारें हे भगवन्! अब आओ! आओ! भव्य हिये॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर.....।
ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः ठः.....।
ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितौ.....।

(पुष्पांजलिं....)

(आधा ज्ञानोदय)

जल से शुचिता पल भर करके, रत्नत्रय जल को पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं ...।

चंदन से प्रभु वंदन करके, समता शीतलता पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं .....।

अक्षत से प्रभु अर्चन करके, शाश्वत अक्षय पद पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् .....।

पुष्पों से प्रभु पूजा करके, ब्रह्मचर्य सौरभ पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं .....।

ये नैवेद्य समर्पण-करके, ज्ञानामृत का सुख पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नेवैद्यं .....।

दीप जला के आरति करके, ज्योतिर्मय आतम पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं .....।

धूप दशांगी अर्पण करके, शुद्ध आत्म सौरभ पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कर्माष्टकदहनाय धूपं .....।

चुन-चुन कर फल अर्पण करके, महामोक्ष फल को पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं .....।

अर्घ्य द्रव्यमय अर्पण करके, अनुपम अनर्घ पद पाने।
करुणासागर सुव्रतप्रभु की, आये हम महिमा गाने॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं .....।

तृतीयवलय अर्घ्यावली

(7 आप्त गुण वर्णन) (चौपाई)

दोष रहित सर्वज्ञ आप्त हो, परम ज्योति जिन विमल आप हो।
परमेष्ठी आगम हितकारी, जय हो! जय हो! नाथ! तिहारी॥ 1॥

ॐ ह्रीं प्रज्ञा अपराध विनाशनसमर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

द्वेष आग से जले संपदा, प्राणी पाते विश्व आपदा।
निंदक द्वेषी दृष्टि न डालो, द्वेषजयी! प्रभु हमें सँभालो ॥ 2॥

ॐ ह्रीं समस्तविध उपद्रवविनाशनसमर्थ वीतद्वेषी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

चन्दा रागी सा परिवारी, सूर्य संत सा गुरु अविकारी।
परम उपेक्षा सहित अकेले, हमे बना लो प्रभु निज चेले ॥ 3॥

ॐ ह्रीं समस्तविध अनर्थकारक रागभूतविनाशनसमर्थ वीतरागी श्रीमुनिसुव्रतनाथ- जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

सूरज दादा जैसे आते, चाँद सितारे तब छिप जाते।
वैसे केवलज्ञान हुआ ज्यों, मति ज्ञान अवसान हुआ त्यों ॥ 4॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदीनताहीनताविनाशनसमर्थ केवलज्ञानी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ....।

परोक्ष ज्ञान श्रुतज्ञान रहा जो, श्रद्धा का सुख-धाम रहा वो।
केवलज्ञान सूर्य जब उगता, श्रुत दीपक तब खुद ही बुझता ॥ 5॥

ॐ ह्रीं समस्तविध अज्ञानविनाशनसमर्थ केवलज्ञानी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

अवधिज्ञान सुख-दुख का हेतु, पर संयममय शिव का सेतु।
वह भी नष्ट वहाँ हो जाता, केवलज्ञान जहाँ हो जाता ॥ 6॥

ॐ ह्रीं समस्तविधदुर्घटनाविनाशनसमर्थ केवलज्ञानी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

मन में थित जो हर हालों की, कथा जानता त्रय कालों की।
संयम ज्ञान मनःपर्यय वो, केवलज्ञान हि देख विलय हो॥ 7॥

ॐ ह्रीं समस्तविधमनोरोगविकारविभ्रमविनाशनसमर्थ केवलज्ञानी श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

(नौ पदार्थ वर्णन)

ज्ञान और दर्शन गुण वाली, वही चेतना सुख-दुखवाली।
जीव तत्त्वमय पदार्थ प्यारा, शुद्ध बने प्रभु अर्चन द्वारा ॥ 8॥

ॐ ह्रीं विकृतजीवदशाविनाशनसमर्थ केवलज्ञानी श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

जहाँ चेतना गुण ना रहते, वह अजीव पदार्थ प्रभु कहते।
अजीव रहित जीव कब पायें?, मुनिसुव्रत प्रभु के गुण गायें ॥ 9॥

ॐ ह्रीं जीवाजीवपृथक्करणसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

निमित्त पाकर कर्म कहानी, मिले चेतना से दुख-दानी।
आस्त्रव रोकें बनकर ज्ञानी, भक्त पूजते सुव्रत-स्वामी ॥ 10॥

ॐ ह्रीं कर्मास्त्रवविनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

जीव कर्म का दूध नीर सा, मिलन बंध भव-हेतु पीर का।
आतम हो निर्बंध हमारी, तभी अर्चना करें तुम्हारी ॥ 11॥

ॐ ह्रीं भव भवबंधनविनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

आस्त्रव रुकना संवर होता, संवर का सुख प्राणी भोक्ता।
जिन-अर्चन साधन संवर का, भूत भगाता जगत् भँवर का ॥ 12॥

ॐ ह्रीं दुःख पापपतनद्वारविनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

तन की ना कर्मों की कर लो, श्रेष्ठ-निर्जरा कर सुख वर लो।
करे निर्जरा संवर द्वारे, जिन-पूजा तप भव से तारे ॥ 13॥

ॐ ह्रीं अनावश्यकभारविनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

विश्व निर्जरा जब हो जाती, पूर्ण मुक्ति चेतन तब पाती।
मोक्ष पदार्थ वही दिलवाओ, सुव्रत प्रभु हमको अपनाओ ॥ 14॥

ॐ ह्रीं जगदापदविनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

जिससे इष्ट वस्तु सुख मिलता, जिसको पा प्राणी-मुख खिलता।
पुण्योदय यश की बलिहारी, दान धर्म शुभ पुण्य प्रकारी ॥ 15॥

ॐ ह्रीं समस्तविधपराभव विनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं ..।

सद्गुण हों दुर्गुण, यश घाटा, पापोदय नहिं हमें सुहाता।
पापोदय से सब दुख पाते, हिंसा पाप, पाप कहलाते ॥ 16॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभूकम्पादिप्राकृतिक आपदा विनाशनसमर्थ परमोपदेशक श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

(दस जीव दशा वर्णन)

देव नारकी पशु नर सारे, जन्तु सत्त्व प्राणी दुखियारे।
कर्म सहित सब हैं संसारी, मिले भक्ति से मोक्ष सवारी ॥ 17॥

ॐ ह्रीं पञ्चपरावर्तनसंसारभ्रमणविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

पंचमगति में नाथ सिद्ध जो, विश्वकर्म बिन शुद्ध-बुद्ध वो।
मिटे गुलामी, हों शिवधामी, सिद्ध वंदना सुसिद्धि दानी ॥ 18॥

ॐ ह्रीं आत्मसिद्धिनिरोधककारणविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

भू जल आग पवन तरु, थावर, दो से पंचेन्द्री त्रस दुख घर।
इन जैसे दुख हम नहिं पायें, तभी नाथ! हम तुमको ध्यायें॥ 19॥

ॐ ह्रीं संयोगवियोगदुःखविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

पंचेन्द्री मन रहित असंज्ञी, मन से सहित जीव हैं संज्ञी।
द्वय भेदों से उठे उच्च जो, पूज्य सुखी वे हमें इष्ट हो ॥ 20॥

ॐ ह्रीं मानसिकदुःख अवसाद तनावादिक विनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

भव्य जीव प्रभु उनको कहते, जो रत्नत्रय प्रकटा सकते।
धर्म अहिंसा संयम धारी, भव्य बनें हम शिव अधिकारी ॥ 21॥

ॐ ह्रीं रत्नत्रयविरुद्धहेतुविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं।

रत्नत्रय प्रकटा ना सकते, कभी न शिव सुख वे पा सकते।
नाथ! अभव्यों का दुख हर लो, धर्म भावना उनमें भर दो ॥ 22॥

ॐ ह्रीं निधत्तिनिकाचितकर्मविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

तन को आपा मान रहे जो, आत्म भावना हीन रहे जो।
बहिरातम जन का जग दुखिया, सुव्रत प्रभु का अर्चक सुखिया॥ 23॥

ॐ ह्रीं कुश्रद्धाविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

देह भिन्न जिनने शिव मानी, उत्तम अंतर आतम ध्यानी।
प्रवृत्तिमय मुनि, श्रावक मध्यम, सम्यक्धारी जघन्य आतम॥ 24॥

ॐ ह्रीं कुश्रुतश्रद्धाविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

सर्वश्रेष्ठ जो आत्म अवस्था, परमातम की सुखी व्यवस्था।
तन से सहित सकल-परमातम, श्री अरहंत देव हरते गम॥ 25॥

ॐ ह्रीं कुदेवश्रद्धाविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

जग जन के आराध्य निराले, सिद्ध कर्म तन बिन, गुणवाले।
पूज्य निकल परमातम पायें, सुव्रतप्रभु का ध्यान लगायें ॥ 26॥

ॐ ह्रीं कपोलकल्पितसिद्धांतश्रद्धाविनाशनसमर्थ आराध्यस्वरूप श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

(अरहंत परमेष्ठी के 14 देवकृत अतिशय) (सुविद्या)

दिव्य-दिव्य ध्वनि जग कल्याणी, जो ओंकार स्वरूप।
जिसको सुन अपनाकर प्राणी, तजते भव-दुख कूप॥
मागध सुर वह सब भाषामय, सरल करें सुखकार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 27॥

ॐ ह्रीं विषय विषकूपविनाशक ज्ञानामृतप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

प्रीतिंकर सुर भक्त जनों के, मन का हरते वैर।
प्रेमभाव हो समवसरण में, शत्रु-मित्र की खैर॥
सर्प-नेवला शेर हिरण भी, हिल मिल बनते यार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 28॥

ॐ ह्रीं शत्रुतावैरभावविनाशक मैत्रीभावप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

दशों दिशायें निर्मल करते, सुरजन भरें बहार।
धूम्र धूलियाँ शीत ग्रीष्म बिन, उज्ज्वलता सुखकार ॥
समवसरण में चमत्कार यह, महिमा अपरम्पार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 29॥

ॐ ह्रीं समस्तविधसंसारमलगालक निर्मलताप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

वर्षा विगत शरद मौसम में, निर्मल हो ज्यों नीर।
मेघ दलो बिन सुर कर दें त्यों, निर्मल नभ गंभीर॥
नील गगन ज्यों शांति प्रदायक, समवसरण त्यों सार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 30॥

ॐ ह्रीं मेघगर्जनाघटादिभयविनाशक अभयप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

क्रमिक फूलने फलने वाली, ऋतुएँ प्रभु को देख।
सभी फूलने फलने लगतीं, एक साथ सिर टेक॥
समवसरण में क्रम के सब पथ, सुर कर दें इक सार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 31॥

ॐ ह्रीं भविष्यचिंतासाम्राज्यविनाशक निर्विकल्पताप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

एक-एक योजन तक धरती, दर्पण सी हो साफ।
चम-चम चमके जिसे देखकर, सुर वैभव चुपचाप॥
रत्नों जैसी रही मनोहर, समवसरण भू-हार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 32॥

ॐ ह्रीं धैर्य साहसवर्धक व्याकुलताविनाशक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

कुल दो सौ पच्चीस कमल के, बीच-बीच जिनदेव।
केशरमय सोने से चमके, खिले हुये स्वयमेव॥
पंक्तिबद्ध सुर निर्मित सारे, शोभित प्रभु के द्वार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 33॥

ॐ ह्रीं चारित्रशुद्धिदायक असंयमनाशक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

देव देवियाँ नभमण्डल में, जय-जय करते घोष।
जय-जयवंत रहे जिनशासन, जय जिनवर निर्दोष॥
समवसरण में कानों को प्रिय, बार-बार जयकार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 34॥

ॐ ह्रीं समस्तविधपराजयविनाशक विजयदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

मंद-मंद जो दिव्य सुगंधित, पवन बहे अनुकूल।
अद्‌भुत परमानंद गंध से, सुख-दुख जाते भूल॥
प्रभुपद सौरभ फैलाते सुर, योजन-योजन पार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 35॥

ॐ ह्रीं समस्तविधग्लानिविनाशक उत्साहवर्धक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

दिव्य गंध से मिश्रित जल की, मंद-मंद बरसात।
रिम-झिम, रिम-झिम, सुरगण करते, जहाँ नहीं दिनरात॥
धैर्य धरे संतोष नासिका, सूँघ-सूँघ सत्कार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 36॥

ॐ ह्रीं अपयश अकीर्ति विनाशक यशदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

गड्‌ढे या रज कीचड़ पत्थर, कंकड़ जो भू-पुत्र।
संकटदा विषकंटक तिनके, पत्ते जो तरु-पुत्र॥
इन बिन भूतल समतल करते, हरते सुर भू-भार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 37॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकष्टपीड़ाविनाशक सुखदायक उत्साहवर्धक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

समवसरण में जहाँ विराजे, अर्हत् जिन भगवान्।
वहाँ भक्त जो आते-पाते, परमानंद महान्॥
जिन-भक्तों का सुर करते हैं, पुरस्कार सत्कार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 38॥

ॐ ह्रीं मानापमान शोक खेदविनाशक परमानंददायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

उज्ज्वल ज्योतित मणिमय जिसने, आरे धरे हजार।
ओजस्वी तेजस्वी सूरज, जिससे जाता हार॥
धर्म चक्र आगे जब प्रभु का, मंगल हुआ विहार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 39॥

ॐ ह्रीं समस्तविधकलंकविनाशक आत्मानुशासनप्रदायक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रत नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

छत्र चँवर कलशा झारी है, धर्म ध्वजा भी साथ।
स्वस्तिक दर्पण ठोना मंगल, अष्ट द्रव्य विख्यात॥
समवसरण में शोभित या सुर, लेकर अग्र विहार।
इन्द्र पूज्य! सुव्रतप्रभु देते, ज्ञानामृत भण्डार॥ 40॥

ॐ ह्रीं समस्तविधभूतपिशाचव्यन्तरादिबाधापीड़ादिभयविनाशक महाजनार्चित श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं .....।

तृतीय वलय जयमाला

(दोहा)

भूत परिग्रह है बड़ा , उससे हम अनजान।
सुव्रतप्रभु के गीत गा, मिले हिताहित ज्ञान॥

(सुविद्या)

लौकिक तथा पारलौकिक जो, गुरु-गुण अपरम्पार।
फिर जिनवर अर्हत् देवों की, महिमा का क्या पार॥
फिर भी प्राणी निजी स्वार्थवश, समझे नहीं स्वरूप।
रागी-द्वेषी सदोष कहते, प्रभु को जो भव-कूप॥ 1॥

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय ये कैसे ? सम्यग्ज्ञान।
इनको केवलज्ञान पूज्य की, किरण कहें नादान॥
जो अर्हत् है केवलज्ञानी, ज्ञानावरण विहीन।
अक्षय केवलज्ञान नंत है, इन ज्ञानों से हीन ॥ 2॥

तत्त्व द्रव्य का जीव दशा का, नहीं हिताहित ज्ञान।
निज पर के अपकारक हैं, जो कैसे वे भगवान् ?

नाथ! आप निर्दोष आप में, अक्षय करुणा प्रेम।
नाम मात्र जग में कर देता, भक्तों को सुख क्षेम॥ 3॥

दर्शक वन्दक अर्चक प्रभु के , हो जाते भव पार।
भले शुरु में दुख पाते पर, अंत भला सुखकार॥
आँधी तूफाँ संकट में भी, भूलें ना प्रभु नाम।
बस हमरे मन में वसना फिर, दूर नहीं शिवधाम॥ 4॥

(दोहा)

प्रभु चरणों की नाँव से, पहुँचाओ भव पार।
मुनिसुव्रत भगवान् दो, हमको यह उपहार॥

ॐ ह्रीं विश्वकल्याणी-श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय तृतीयवलयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

मुनि सुव्रत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा .....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

जाप्यमंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगत् संकटमोचनाय-भयातंक निवारणाय श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

सूर्य चाँद जब तक रहें, गिरि सागर में नीर।
तब तक सुव्रतनाथजी, जय जयवंत सुवीर॥

(सुविद्या)

जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत! जय मुनिसुव्रत नाथ।
आप बीसवें तीर्थंकर हो, काम बीसवाँ हाथ॥

काम नहीं उन्नीस सुहाया, कर डाला इक्कीस।
मानस तल पर तभी विराजे, सिद्धालय के ईश॥ 1॥

मोहकर्म-तम विघ्न निवारक, तारणतरण जहाज।
जगहितकारी मंगलकारी, गुणधारी जिनराज॥
आपदहारी संपदकारी, अतिशयवान् जिनेश।
कुगतिनिवारी शिवसुखकारी, मुक्ति रमा परमेश॥ 2॥

कण-कण गुण-गण मणिमय पूजित, रहो सदा जयवंत।
जो भी पूजे नाम तिहारा, नहीं रहे भयवंत॥
हम भी छोटे भक्त तुम्हारे, अज्ञानी हैं बाल।
भक्ति सहित फिर भी गुण गाते, छूटे भव जंजाल ॥ 3॥

बस इतना सामर्थ्य हमारा, हुये हँसी के पात्र।
दोष क्षमाकर पावन कर दो, भक्तों का मन गात्र॥
ज्ञान आपका ध्यान आपका, जपें आपका नाम।
शीश झुकायें गाथा गायें, जीवन में अविराम॥ 4॥

बदले में बस इतना चाहें, इच्छा होवे पूर्ण।
विश्वशांति हो, प्रेमभाव हो, सुखी जगत् संपूर्ण॥
भय आतंक रहित हो दुनियाँ, पापों से हो दूर।
धर्म भावना समझ हिताहित, सेवक बनें जरूर ॥ 5॥

तजे उपेक्षा और अपेक्षा, मंदिर हो संसार।
दया प्रेम करुणा हो मन में, मंगलमय आचार॥
रोग गरीबी लूट मार ये, होवें सकल समाप्त।
प्रचार प्रसार हो मूल धर्म का,समझें प्राणी आप्त॥ 6॥

कर्त्तव्यों का हो परिपालन, माँगे ना अधिकार।
उपदेशों की शिक्षा पालें, गौ-बछड़े सा प्यार॥

सीमाओं के पार न जायें, सज्जन बनें महान्।
भार बनें ना हम गैरों पर, बस इतना अरमान॥ 7॥

दिया आपने भक्त जनों को, मुँह माँगा वरदान।
योग्य लगे तो झोली भर दो, हम पायें सद्ज्ञान॥
धर्म क्रांति घर-घर हो जाये, हरियाली सुख छाँव।
दूर भ्रांति सब की हो पायें, मुक्ति रमा का गाँव॥ 8॥

जय! जयवंत रहे जिनशासन! जय-जय! श्री जिनदेव।
जय-जय! हो जिनवाणी मैय्या, जय-जय। श्री गुरुदेव॥
सुव्रतस्वामी, सुव्रत-दानी, 'सुव्रत' को दो दान।
सुव्रत-पालो सुव्रत-पा-लो, शिव-सुख सुव्रतधाम॥ 9॥

सुव्रतस्वामी की शरण, जिन्हें मिले पद छाँव।
उनके व्रत सुव्रत बनें, मिले मोक्ष का गाँव॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूणार्घ्यं .....।

मुनिसुव्रतस्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा .....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, मुनिसुव्रत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री मुनिसुव्रतनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

शांतिनाथ जिन तीर्थ हैं, रामटेक भू-खास।
विद्या गुरु आचार्य का, ससंघ वर्षावास ॥ 1॥

शांति वीर शिव ज्ञान ये, परम्परा गुरु ज्ञान ।
सुव्रत-सुव्रतनाथ का, 'सुव्रत' लिखे विधान॥ 2॥

दो हजार सन् आठ में, शनि दिन नौवाँ माह।
दिनाँक सत्ताबीस थी, चले भक्ति की राह ॥ 3॥

छन्द गीत व्याकरण का, नहीं ज्ञान - सिद्धांत।
त्याग हास - उपहास कर, शुद्ध पढ़ें धीमंत॥ 4॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : चंदा तू ला रे....)

जय हो! हे सुव्रतस्वामी!, तुमको शतबार नमामि,
चरणों में झुकते हैं हम भारती॥
हो स्वामी, हम सब उतारें तेरी आरती॥

मुनिसुव्रत प्रभु कष्ट हरो, स्वामी जय प्रभु कष्ट हरो
हम हैं चरण पुजारी तेरे[2], हमको नहिं विसरो।
हो स्वामी, नीली सी सुंदर काया, साँवलिया रूप सुहाया,
हमको तुम्हारी करुणा तारती... हो स्वामी.....॥

आप बीसवे तीर्थंकर हो, करते इक्कीसा[2]
किये राजगृह का संचालन[2], अंतर शांति भरो।
हो स्वामी, सुमित्र-सोमा के नंदन, तुम ही परमातम भगवन्,
तुमको भक्तों की भक्ति पुकारती....हो स्वामी....॥

नाम आपका तारणहारा, दुख संकटहारी[2]
हम भी चरण शरण में आये[2], हम पर कृपा करो।
हो स्वामी, हमको क्यों रोता छोड़ा, बोलो क्यों मुखड़ा मोड़ा,
दुखियों की अर्जी सुनलो सारथी.... हो स्वामी....॥

चाह नहीं कुछ पर वस्तु की, तुम्हें देखकर के[2]
मुनिसुव्रत को 'सुव्रत' माँगे[2], इच्छा पूर्ण करो।
हो स्वामी, हम पर तुम नजरें कर दो, आतम से झोली भर दो,
नजरें ही नैया को उतारती.... हो स्वामी....॥